AGRICULTURE UNIVERSITY,
JODHPUR
JODHPUR 342304, Rajasthan, India
कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
जोधपुर 342304, राजस्थान, भारत

Telefax
0291 2570710(O)
0291-2570711
E-mail: vcunivag@gmail.com

डॉ. एम.एल. मेहरिया
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

दिनांक 22.03.2018

प्रेस नोट

बाजरा अनुसंधान परियोजना की 53वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ

अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना की 53वीं वार्षिक समूह बैठक का कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं भारतीय कृषि अनुसंधन परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वाधान में आज दिनांक 22 मार्च 2018 को कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर के सभागार कक्ष में शुभारंभ किया गया। कार्यशाला में कुलपति, डॉ. बलराज सिंह द्वारा स्वागत उद्‌बोधन में देशभर से पधारे वैज्ञानिकगणों एवं अधिकारियों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आई. एस. सोलंकी, ए.डी.जे. खाद्‌य एवं चारा फसलें, आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली द्वारा अपने सम्बोधन में बताया कि बाजरा फसल के अच्छे दिन आ चुके हैं साथ ही बाजरा फसल की उत्पादकता देश की आजादी के समय 300 कि./है. के लगभग थी, जो बढ़कर 2016–17 में 1305 कि./है. हो गई हैं। इन्होंने बताया कि पोषक त्तत्व एवं मूल्य संवर्धन के सम्बन्ध में शोध करने की आवश्यकता हैं, जिससे कि इसकी उत्पादकता में वृद्धि हो सकें तथा इस खेती को करने हेतु किसानों को अधिक से अधिक आकर्षित किया जा सकें। इस सम्बन्ध में विभिन्न निजी कम्पनियों के साथ गठजोड़ कर किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने का प्रयास करने तथा बाजरे की शीध्र सड़न की समस्या के निदान के सम्बन्ध में अधिक शोध की आवश्यकता का सुझाव दिया।

कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि डॉ. पी. राघवा रेड्‌डी, उपाध्यक्ष, एग्री बायोटेक फाउण्डेशन एवं भूतपूर्व कुलपति, ए.एन.जी.रंगा, कृषि विश्वविद्यालय, हैदाराबाद ने अपने सम्बोधन में बताया कि दिन ब दिन खेती हेतु भूमि का लगातार कम होना तथा भूमिगत जल स्तर की गिरावट मुख्य समस्याऐं हैं। इस प्रकार बाजरा फसल को भारत की मुख्य फसल के साथ साथ स्वास्थ्यवर्धक बताया, जिसका विदेशों में भी बहुतायत में उपयोग होता हैं। डॉ. रेड्‌डी ने बताया कि बाजरा का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित होना चाहिए, जिससे की किसान कम लागत में अधिक उत्पादन कर सकें और बाजरे की खेती भूमि में वृद्धि हो सकें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति, डॉ. बलराज सिंह ने अपने सम्बोधन में देश में पानी की कमी को सबसे बड़ी समस्या बताते हुए पानी की कम आवश्यकता वाली बाजरे की फसल को पश्चिमी राजस्थान की सबसे उपयुक्त फसल बताया। डॉ. सिंह द्वारा बाजरा समन्वित परियोजना द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए भविष्य में भी इस फसल के सम्बन्ध में अधिक से अधिक लाभान्वित शोध किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि राजस्थान के बाड़मेर जिला जहाँ पानी की बहुत कमी

होते हुए भी बाजरे की फसल लगभग 40–45 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादित की जा रही हैं।

कार्यशाला की मुख्य संयोजिका डॉ. सी.तारा. सत्यावती, परियोजना संयोजिका, पी.सी. युनिट, आई.सी.ए.आर.–ए.आई.सी.आर.पी., पर्ल मिलिट, मण्डोर–जोधपुर द्वारा अपने सम्बोधन में बाजरे के पोषक तत्त्वों, रोगप्रतिरोधकता में कमी, बाजरे की भण्डारण क्षमता तथा बाजरे की नई किस्मों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इन्होंने बताया कि वर्तमान में बाजरे के क्षेत्रफल में भारत 7.5 मिलियन हैक्टेयर के साथ विश्व में अग्रणी हैं।

समूह बैठक को सम्बोधित करते हुए डॉ. ओ.पी. यादव, निदेशक, काजरी, जोधपुर ने बताया कि बाजरे की उत्पादकता में पिछले 15 वर्षों के मुकाबले इस वर्ष पूरे देश में सबसे अधिक बढ़ोतरी हुई हैं। डॉ. यादव द्वारा बताया गया कि बाजरे की ऐसी उन्नत किस्में विकसित करने की जरूरत हैं, जो कम पानी में अधिक उत्पाकता के साथ अधिक रोगप्रतिरोधी हो। देश में बाजरे पर किये गये विशेष अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य हेतु परियोजना की संयोजिका डॉ. सी.तारा. सत्यावती तथा उनके सहयोगियों की सराहना की गई।

कार्यक्रम में बाजरे में उल्लेखनीय अनुसंधान कार्य हेतु डॉ. बलवंत सिंह राजपुरोहित, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, मण्डोर–जोधपुर को बाजरे की विभिन्न नई संकर किस्मों को विकसित करने तथा अखिल भारतीय बाजारा अनुसंधान परियोजना में लगभग 17 वर्ष तक अनुसंधान एवं विकास कार्यों हेतु कुलपति एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा समरी ऑफ रिसर्च एक्सपेरीमेन्टस की सी.डी. एवं रिसर्च बुकलेट, पर्ल मिलेट न्यूज लेटर, मैनेजमेन्ट ऑफ ब्लास्ट एण्ड पर्ल मिलेट इन इण्डिया, पर्ल मिलेट

हाईब्रिड एण्ड वेरायटीज तथा डिजीस इन पर्ल मिलेट आदि पत्र–पत्रिकाओं का एवं अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना के लोगो (प्रतिक चिन्ह) का विमोचन किया गया। अन्त में डॉ. सीताराम कुम्हार, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर–जोधपुर ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

(डॉ. एम.एल. मेहरिया)